भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 108
उत्तर देने की तारीख 25.11.2024

क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देना

108. श्री ई. टी. मोहम्मद बशीर :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) ऐसी क्षेत्रीय भाषाओं, परम्परागत कलाओं तथा अभिनेय कलाओं की सहायता और संवर्द्धन के लिए की गई विशिष्ट पहलों का ब्यौरा क्या है जो लुप्त होने के कगार पर हैं; और

(ख) इस संबंध में सरकार की कार्य योजना का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) और (ख): संस्कृति मंत्रालय क्षेत्रीय भाषाओं, परंपरागत कलारूपों, और लुप्तप्राय मंच कलाओं सहित भारत की समृद्ध विरासत के परिरक्षण, संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रतिबद्ध है। अपने स्वायत्त निकायों और क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों (जेडसीसी) के माध्यम से मंत्रालय द्वारा कई लक्षित पहलें की जाती है।

साहित्य अकादेमी (एसए) भाषा सम्मेलनों के आयोजन और हरियाणवी, कोशाली-संबलपुरी, पाइते, मगही, तुलु, कुरुख, लद्दाखी, हल्बी, सौराष्ट्र, कुमाउनी, भीली, वर्ली, बंजारा/लम्बाणी, खासी, मिसिंग, कोडवा, चकमा, राजबंशी, अवधी, बुन्देली, गढ़वाली, कच्छी, हिमाचल, आओ, कार्बी, अंगामी, गोंडी, हो, छत्तीसगढ़ी, गोजरी, भोजपुरी, अहिरनी, लेपचा, मुंडारी, गारो, भीली, कुई, खासी, मिजो, पहा, कोकबोरोक जैसी गैर मान्यताप्राप्त भाषाओं के लिए विद्वानों को उनके योगदान हेतु पुरस्कार प्रदान करते हुए 24 मान्यताप्राप्त भाषाओं और विभिन्न गैर-मान्यताप्राप्त तथा जनजातीय भाषाओं में साहित्य के संवर्धन के लिए कार्य करती है।

संगीत नाटक अकादेमी (एसएनए) और ललित कला अकादेमी (एलकेए) क्रमश: संकटापन्न मंच कलाओं और दृश्य कलाओं को परिरक्षित करने के लिए कार्यशालाओं, प्रदर्शनियों और आवासीय

कार्यक्रमों का आयोजन और मंच कला संग्रहालय तथा क्षेत्रीय कला एवं प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिए परी (पीएआरआई) परियोजना जैसे मंच सृजित करने जैसे कार्य करती है। देशभर के मृतप्राय और दुर्लभ मंच कला रूपों के परिरक्षण के लिए इन स्वायत्त निकायों द्वारा कला दीक्षा, कला धरोहर, मंच कला संग्रहालय, कला प्रवाह (मंदिर महोत्सव श्रृंखला), ज्योतिर्गमय, कठपुतली कला शिविर, डोकरा कास्टिंग, मुखौटा बनाना, रंगोली कार्यशाला, जनजातीय कला कॉन्क्लेव जैसी अन्य कई पहलें की गई हैं।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (आईजीएनसीए) फिल्मों, ग्रंथों, डिजिटल अभिलेखागारों और कार्यशालाओं के माध्यम से संकटापन्न भाषाओं और कला रूपों के प्रलेखन पर ध्यान केन्द्रित करता है। राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) की असंख्य संभावनाओं का पता लगाने और विद्वानों, शोधार्थियों और आम जनता तक दुर्लभ पांडुलिपियों की पहुंच को सुलभ बनाने के लिए पांडुलिपियों के संरक्षण का कार्य करता है।

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र (जेडसीसी), स्कीमों के माध्यम से दुर्लभ और लुप्तप्राय कला रूपों के पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जैसे कि गुरु-शिष्य परंपरा, जिसमें प्रख्यात गुरु शिष्यों को प्रशिक्षित किया जाता है और युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए युवा प्रतिभावान कलाकारों को पुरस्कार प्रदान करना। अन्य उल्लेखनीय पहलों में शामिल हैं, रंगमंच नवीनीकरण, जिसमें स्टेज शो और कार्यशालाओं को सहायता प्रदान की जाती है, शिल्पग्राम, जिसमें ग्रामीण शिल्प कलाओं का संवर्धन और मेलों का आयोजन किया जाता है और राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (एनसीईपी) जो अंतर-सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देता है।

मंत्रालय की कार्य योजना में संकटापन्न कला रूपों और भाषाओं का सतत प्रलेखन, अनुसंधान के लिए डिजिटल अभिलेखागारों का विस्तार और गुरु-शिष्य परम्परा जैसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से अंतर पीढ़ीगत अंतरण सुनिश्चित करना शामिल है। भावी पीढ़ी के लिए देश की सांस्कृतिक विरासत की संरक्षा करने की दृष्टि से भारत की विविधतापूर्ण विरासत के प्रति जागरूकता और सराहना को बढ़ाने के लिए सार्वजनिक–निजी सहयोग और राज्य स्तरीय भागीदारी के माध्यम से देश भर में सांस्कृतिक महोत्सव, प्रदर्शनियां और आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित करने की परिकल्पना की जाती है। भाषा सम्मान जैसे पुरस्कारों से कलाकारों और विद्वानों को सम्मानित करना और ऑक्टेव जैसी पहलों के माध्यम से पूर्वोत्तर की सांस्कृतिक विरासत का संवर्धन मंत्रालय की कार्यनीति का अभिन्न भाग है।

*****